Vagisha International Multidisciplinary Research Journal
(International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal)
Volume-01, Issue-03,June-2026| ISSN: 3139-2776 (online)
Available online at:https://vimrj.com/
DOI: https://doi.org/10.67185/vimrj.v1i3.19

रोहिलखंड क्षेत्र का भारतीय संस्कृति में सांगीतिक योगदान

प्रिंस गुप्ता[1], डॉ. संध्या रानी शाक्य[2]

[1]शोधार्थी, संगीत विभाग, वीरांगना रानी अवंती बाई लोधी राजकीय महिला महाविद्यालय, बरेली
[2]शोध निर्देशिका, संगीत विभाग, वीरांगना रानी अवंती बाई लोधी राजकीय महिला महाविद्यालय, बरेली
(सम्बद्ध–महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश)
E-mail : masterprincemahajan@gmail.com

Received: 08 May 2026 | **Accepted:** 17 May 2026 | **Published:** 25 June 2026

सारांश

सांस्कृतिक विरासत के सर्वांगीण विकास को अपने आंचल में समेटे हुए किसी भी क्षेत्र का लोक–साहित्य वहाँ की अमूल्य धरोवर है। लोक संगीत भारतीय संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। यह आम जनजीवन की भावनाओं, परंपराओं, रीति–रिवाजों और सामाजिक अनुभवों की संगीतात्मक अभिव्यक्ति है। लोक संगीत का विकास गाँवों और समुदायों के बीच हुआ, इसलिए इसमें समाज की वास्तविक जीवन शैली की झलक दिखाई देती है। लोक संगीत किसी भी प्रदेश या क्षेत्र का हो, वह सरलता और स्वाभाविकता लिए हुए सरल भाषा और सहज धुनों में होते हैं। पीढ़ी–दर–पीढ़ी मौखिक रूप से आगे बढ़ता रहता है। इसमें क्षेत्र विशेष की भाषा, पहनावा, जीवन शैली और मान्यताओं का वर्णन मिलता है। यह प्रकृति से सम्बन्धित ऋतु, वर्षा, फसल और प्राकृतिक वातावरण से जुड़े गीत तथा भावनाओं जैसे प्रेम, विरह, खुशी, दुख, वीरता भक्ति जैसे भावों से ओत–प्रोत होते हैं। लोक संगीत ने भारत की प्राचीन परम्पराओं, लोककथाओं और रीति–रिवाजों को सुरक्षित रखा है। संगीत त्योहारों, विवाहों और सामूहिक आयोजनों में लोगों को जोड़ने का कार्य करता है और सामाजिक एकता को दर्शाता है। लोक संगीत ने भारतीय संगीत को अनेक शैलियाँ धुनें ओर वाद्य परम्पराएँ प्रदान की हैं। लोकसंगीत भारतीय संस्कृति की आत्मा है। यह केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि भारतीय समाज के इतिहास भावनाओं और जीवन मूल्यों का जीवंत दस्तावेज है। लोकसंगीत भारत की सांस्कृतिक विविधता में एकता का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द : भारतीय, परम्परा, सामाजिक, संस्कृति, लोक संगीत, समाज।

रोहिलखंड क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान

रोहिलखंड उत्तर प्रदेश के उत्तर–पश्चिम में स्थित एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक क्षेत्र है महाभारतकाल में यह क्षेत्र पांचाल कहलाता था, जिसका नामकरण 18वीं शताब्दी पूर्वाद रूहेला पठानों द्वारा समय–समय पर सत्ता स्थापित करने पश्चात् यह 'रोहिलखंड' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह गंगा नदी के ऊपरी मैदान में लगभग 25000 वर्ग कि॰मी॰ क्षेत्र में फैला है। इसके पश्चिम में उत्तराखंड, उत्तर में नेपाल, दक्षिण–पश्चिम में गंगा और पूर्व में अवध है। गंगा, रामगंगा, गोमती और इनकी सहायक नदियाँ यहां की प्रमुख नदियाँ है। इसमें मुख्य रूप से बरेली, अमरोहा (पूर्व में ज्योतिबा फुले नगर वर्तमान में अमरोहा) रामपुर; बदायूँ, संबंल, बिजनौर, मुरादाबाद, शाहजहाँपुर, पीलीभीत आदि प्रमुख 9 जिले शामिल माने जाते हैं। हिमालय की तराई से लेकर गंगा यमुना के उपजाऊ मैदानों तक फैले इस भू–भाग ने भारतीय संस्कृति और राजनीति के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहाँ के अनेक ऐतिहासिक स्मारक, मन्दिर, मस्जिद, पूर्ण रूप से या उनके अवशेष आज भी प्रसिद्ध हैं, जहाँ लोग दर्शन करने के लिए दूर–दूर से आते हैं। रामपुर की रजा लाइब्रेरी, उर्दू, फारसी की एशिया की सबसे बड़ी लाइब्रेरी में से एक हैं। रजा लाइब्रेरी में अरबी, फारसी, संस्कृत, तुर्की, पश्तों, हिंदी भाषाओं की प्राचीन कालीन तथा मुगलकालीन पांडुलिपियों का संग्रह है। यहां के नवाबों का साहित्य व संगीत के प्रति विशेष प्रेम रहा है। नवाबों द्वारा विभिन्न साहित्यकारों, कलाकारों, संगीतज्ञों को संरक्षण प्रदान किया गया तथा उनके द्वारा इन्हें पुरस्कृत भी किया गया।[1]

रोहिलखंड क्षेत्र विद्या और कला कौशल का केंद्र रहा है। यहां की संगीत परंपरा समृद्ध है। जिसमें रामपुर सहसवान और भिंडी बाजार जैसे प्रसिद्ध संगीत घराने शामिल हैं। भिंडी बाजार घराने के संस्थापक उस्ताद छज्जु खान, नजीर खान और खादिम हुसैन खान–मूल रूप से रोहिलखंड क्षेत्र के मुरादाबाद (बिजनौर) से थे। 1890 के दशक में मुंबई जाकर बसने के कारण इसका नाम भिंडी बाजार घराना पड़ा, लेकिन मूल जड़ें रोहिलखंड से जुड़ी हुई है। इस क्षेत्र की सभ्यता व संस्कृति को देखने पर यहाँ की सम्पन्नता का अनुमान लगाया जा सकता है। लोक संस्कृति में लोकगीत, जनवार्ता (आल्हा, ढोला) और चहारबैत (एक पठानी राग) प्रमुख है। त्यौहार, मेले और धार्मिक स्थल इसकी सांस्कृतिक विविधता को दर्शाते हैं तथा जनजीवन, परम्पराओं, त्योहारों और सामाजिक भावनाओं का जीवंत चित्र प्रस्तुत करता है। रोहिलखंड का लोक संगीत ग्रामीण जीवन से जुड़ा हुआ है। इसमें लोकभाषा, लोक कथाओं तथा स्थानीय रीति–रिवाजों की झलक देखने को मिलती है। रोहिलखंड क्षेत्र के लोक संगीत की परम्परा उन्नत है, क्योंकि रोहिलखंडवासी चाहे शिक्षित हैं या अशिक्षित पूर्णतः अपने

रीति–रिवाजों, सामाजिक परम्पराओं, लोक संगीत व भारतीय संस्कृति और संस्कारों से जुड़ा हुआ है। संगीत ही मानव जीवन को नाचने झूमने के लिए प्रेरित करता है।[2]

उत्तर प्रदेश राज्य के रोहिलखंड क्षेत्र की सभ्यता, संस्कृति एवं संगीत का एक गौरवमयी इतिहास रहा है। रोहिलखंड क्षेत्र में बरेली का गोस्वामी परिवार की बात करें तो उन्होंने उत्तर भारतीय शास्त्रीय व उपशास्त्रीय संगीत में भक्ति साधना और शिक्षा का अद्वितीय समन्वय स्थापित किया है। श्री वैष्णव सम्प्रदाय की परंपरा से ये जुड़े गोस्वामी परिवार संगीत को केवल कला ही नहीं बल्कि ईश्वर सेवा और आत्मिक उन्नति का माध्यम मानते हैं। मन्दिरों में नित्य संगीत सेवा ने इसे धार्मिक जीवन का अभिन्न अंग बनाया, जिससे भक्ति और संगीत का गहरा मेल स्थापित हुआ। इस क्षेत्र में भजन, कीर्तन, कव्वाली, सूफ़ी संगीत और धार्मिक गायन की समृद्ध परम्परा रही है। ये संगीत भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिक, सद्भाव और सामाजिक एकता को बढ़ावा देता है। दक्षिण भारत से आया हुआ यह गोस्वामी परिवार बीते डेढ़ सौ वर्षों से अपना सांगीतिक योगदान दे रहा है और आप भी कई घरानों के भांति संगीत का प्रचार प्रसार कर रहा है। और बलदेव संगीत विद्यालय के माध्यम से अनेक शिष्यों को तैयार कर रहा है।[3]

शास्त्रीय संगीत के घरानों के घराने रामपुर सहसवान घराना व भिंडी बाज़ार घराना रोहिलखण्ड क्षेत्र के विख्यात घरानों में से एक है। उपशास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत हिन्दुस्तानी गायन शैली का ध्रुपद रोहिलखंड क्षेत्र की प्रचलित गायन विद्या है तथा रोहिलखण्ड क्षेत्र का लोक संगीत तीन भागों में विभाजित है– लोकगीत, लोक गाथा व चहारबैत। रोहिलखण्ड का एक स्वर्णिम इतिहास रहा है, जो अपने आप में अपनी सभ्यता, संस्कृति एवं संगीत को स्थापित किए हुए है। रोहिलखण्ड विशेष रूप से रामपुर, भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र रहा है। यहाँ विकसित रामपुर – सहसवान घराने ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को नई ऊँचाईयाँ प्रदान की। इस घराने की गायकी अपनी शुद्धता, आलाप, तानों और रागों की गहन प्रस्तुति के लिए प्रसिद्ध हैं। इनकी साधना में राग, ताल, स्वर और भाव का संतुलित समन्वय दिखाई देता है। जो संगीत को शास्त्रीय और आध्यात्मिक दोनों रूपों में समृद्ध करता है। जो पीढी–दर–पीढी संगीत परंपरा को संरक्षित करती हैं। गोस्वामी परिवार ने श्रीमद्भागवत को अपने वंश का मूलाधार बनाकर भक्ति का प्रचार–प्रसार अपने वैष्णवी शिष्यों में किया गोस्वामी परिवार ने ही शास्त्रीय संगीत को भक्ति भावना के लिए वरदान माना जहाँ ये श्रीमद्भागवत के कुशल ज्ञाता थे वहाँ शास्त्रीय संगीत के अध्ययनकर्त्ता और संगीत कलाकारों के गुणग्राही थे समय–समय पर मंदिर के उत्सवों में शास्त्रीय संगीत के कलाकारों को आमंत्रित कर भक्ति संगीत की

स्रोतस्विनी प्रवाहित करते थे। मंदिर–सेवा, रचनात्मक लेखन, मंचीय प्रस्तुति और अनुसंधान में उनकी सक्रिय भूमिका ने संगीत को केवल कला ही नहीं बल्कि, साधना और आत्मिक उन्नति का माध्यम बनाया है।[4]

भारतीय शास्त्रीय संगीत की बात करें तो "सम्यक् गीतं इति संगीत्" अर्थात् जो गायन वादन और नृत्य का समुचित एवं संतुलित समन्वय हो, उसे संगीत कहते है। सुर, लय और ताल के आधार पर भावों की सुंदर एवं कलात्मक अभिव्यक्ति संगीत है।

शास्त्रीय परिभाषा में "गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते" अर्थात् गीत वाद्य और नृत्य तीनों कलाओं का सम्मिलित रूप संगीत कहलाता है। परन्तु हम अपने शोध पत्र रोहिलखंड के संदर्भ में यह परिभाषा विशेष रूप से सार्थक प्रतीत होती है। इस क्षेत्र की संगीत परंपरा में गायन, वादन एवं नृत्य तीनों का संतुलित एवं समृद्ध स्वरूप विद्यमान है। यहाँ की सांगीतिक धारा में एक ओर भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा का प्रभाव दिखाई देता है, तो दूसरी और लोकसंगीत, भक्ति संगीत तथा सूफी संगीत की समृद्ध परंपराएँ भी समान रूप से विकसित हुई है। अनेक संगीताचार्यों ने गायन को संगीत का मूल आधार माना है। क्योंकि वादन और नृत्य का विकास भी मूलतः गायन की परंपरा से संबद्ध रहा है। इसी कारण प्रस्तुत शोध में रोहिलखंड की सांगीतिक परंपरा के अध्ययन का मुख्य कंद्र गायन है। अतः मेरे शोध कार्य में रोहिलखंड की गायन परंपरा तथा भारतीय संस्कृति में सांगीतिक योगदान विषय पर अध्ययन किया जा रहा है।

रोहिलखंड के प्रमुख लोकसंगीत, उपशास्त्रीय संगीत तथा शास्त्रीय संगीत रूप –

- कजरी गीत–वर्षा ऋतु और विरह की भावनाओं को व्यक्त करने वाले गीत होते हैं।
- विवाह गीत–विवाह संस्कारों में गाए जाने वाले मंगल गीत जिनमें पारिवारिक भावनाएं दिखाई देती है।
- सोहर–जन्म अवसर पर गाए जाने वाले लोकगीत।
- होली और फाग गीत–रंगों और उत्सव की खुशी को व्यक्त करने वाले गीत।
- आल्हा गायन–वीरता और ऐतिहासिक घटनाओं को प्रस्तुत करने वाले लोकगायन शैली।
- भजन एवं धार्मिक लोकगीत–आध्यात्मिक भावनाओं को व्यक्त करने वाले गीत।
- ठुमरी–विशेषकर रामपुर और बदायु क्षेत्र में प्रसिद्ध गायन शैली।

- दादरा–श्रृंगार और कोमल भावों की अभिव्यक्ति।
- चैती–चैत्र मास में गाई जाने वाली शैली।
- गजल गायन–रोहिलखंड की सांस्कृतिक सभाओं में अत्यंत लोकप्रिय गायन।
- रोहिलखंड के शास्त्रीय संगीत में स्वर, ताल, लय और रागों की शुद्धता पर विशेष ध्यान रखा जाता है । इसमें ख्याल गायन की उत्कृष्ट शैली का प्रयोग होता है।

रोहिलखण्ड के वाद्य यंत्र –

रोहिलखंड के लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत तथा उपशास्त्रीय संगीत परम्परा में वाद्य यंत्रों की बात करें तो इनका अपना एक विशेष महत्त्व है। यहाँ के लोक गीतों, धार्मिक आयोजनों, विवाह, मेले और सामाजिक कार्यक्रमों में विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है। ये वाद्य यंत्र लोकजीवन की भावनाओं और संस्कृति को व्यक्त करते हैं। इनमें ढोलक, नगाड़ा, हारमोनियम, सारंगी, बांसुरी, मंजीरा, शहनाई आदि वाद्यों का प्रयोग किया जाता है।[5]

भारतीय संस्कृति में योगदान :

1. रोहिलखण्ड के लोक संगीत ने भारतीय लोक परम्पराओं ओर सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखा है।
2. यह समाज की भाषा, इतिहास, रीति–रिवाज और जीवन शैली को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाता है।
3. लोक गीतों के माध्यम से सामाजिक एकता और सामूहिक भावना को बढ़ावा मिलता है।
4. रोहिलखंड का लोकसंगीत भारतीय संगीत की विविधता को समृद्ध करता है।
5. इसमें प्रकृति, प्रेम, वीरता और आध्यात्मिकता जैसे भारतीय जीवन मूल्यों का सुंदर चित्रण मिलता है।[6]

निष्कर्ष

रोहिलखंड का लोकसंगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति की पहचान और लोक जीवन की धरोहर है। यह क्षेत्र अपनी समृद्ध संगीत परम्परा, लोकगीतों, शास्त्रीय संगीत और सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ का संगीत भारतीय संस्कृति की विविधता, लोकजीवन और सामाजिक मूल्यों का सशक्त प्रतिनिधित्व करता है। यह क्षेत्रीय संस्कृति को राष्ट्रीय सांस्कृतिक परंपरा से जोड़ने का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। यही नहीं रोहिलखंड के अनेक ऐतिहासिक स्मारक, मंदिर, मस्जिद

पूर्णरूप से या उनके अवशेष भी यहाँ की सभ्यता, व संस्कृति का प्रमाण दे रहे हैं। साहित्य संस्कृति व संगीत की परंपरा का निर्वहन वर्तमान में भी अनेक साहित्यकारों, कलाकारों और शोध कर्ताओं के माध्यम से किया जा रहा है। कम शब्दों में इस क्षेत्र की विशालता को प्रस्तुत करने में सभी विद्वज्जनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

संदर्भ सूची

1. डॉ॰ रोशनी भोपाल, ***लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति,*** कैलाश पुस्तक सदन
2. नीरजा द्विवेदी, ***रूहेलखंड के परंपरागत लोकगीत***
3. लेखिका, डॉ॰ (श्रीमती) संध्या रानी, ***उत्तर प्रदेश के रूहेलखण्ड क्षेत्र की संगीत परम्परा (एक विवेचनात्मक अध्ययन)*** रामपुर रजा लाइब्रेरी, रामपुर, 244901
4. डॉ॰ दिवाकर शर्मा ***श्री दाऊ जी का मंदिर और संगीत साधक गोस्वामी परिवार***
5. डॉ॰ लाल मणि मिश्र, ***भारतीय संगीत वाद्य***
6. डॉ॰ माया टाक, ***संगीत सम्पदा***